Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

संस्कृत एवं आर्हत रामायण परम्परा का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ . सुधीर कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य (संस्कृत) बाबा बरुआदास रनातकोत्तर महाविद्यालय,
परुइया आश्रम, अम्बेडकरनगर।

Article Info
Volume 6, Issue 4
Page Number : 73-77

Publication Issue :
July-August-2023

Article History
Accepted : 01 July 2023
Published : 15 July 2023

शोधसारांश–यता कथानक और मूल चरित्रों में दिखती है, जबकि वैषम्यता दर्शन, चरित्र–चित्रण और नैतिकता में स्पष्ट है। यह तुलना दर्शाती है कि एक ही कथा विभिन्न दृष्टिकोणों से कैसे प्रस्तुत हो सकती है, जो भारतीय संस्कृति की विविधता को उजागर करती है। अंतः यही सार्वभौम सत्य है कि राम सर्वव्यापी है। 'प्राचेतस भगवान् वाल्मीकि को अमोघ आशीः प्रदान करते हुए ब्रह्मा जी ने कहा था–पर्वत यथावत् स्थिर हैं, नदियाँ पूर्ववत् प्रवहमान हैं और रघुनन्दन श्रीराम की पावन गाथा भी, विविध विवर्तों से अग्रेसर होती लोकों को आप्यायित कर रही है।

मुख्य शब्द– संस्कृत, रामायण, सम्यता, वैषम्यता, धार्मिक, दार्शनिक, अहिंसा, कर्म।

भद्रो भद्रयासचमानआगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् ।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात्।।
(ऋग्वेद 10–3–3)[1]

रामायण भारतीय साहित्य और संस्कृति का एक अनमोल रत्न है, जिसने विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं को प्रभावित किया है। वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत रामायण हिंदू परंपरा का मूल ग्रंथ है, जो राम को विष्णु का अवतार मानता है और धर्म की स्थापना के लिए उनके जीवन को चित्रित करता है। दूसरी ओर, जैन परंपरा ने रामायण की कथा को अपने दर्शन, अहिंसा, कर्म सिद्धांत और आत्म–संयम के अनुरूप ढाला है। यह कथा मुख्य रूप से विमलसूरि के पउमचरियं (पद्मचरित), रविषेण के पद्मपुराण और गुणभद्र के उत्तरपुराण जैसे ग्रंथों में देखने को मिलती है।

परन्तु आर्हत परम्परा के राम 'परमेश्वरावतार' नहीं हैं। इस मत में जब ईश्वर की ही प्रतिष्ठा नहीं, तो फिर 'ईश्वरावतार' होने का प्रश्न ही कहाँ? इतना ही नहीं, जैन परम्परा के राम 'मर्यादापुरुषोत्तम' भी नहीं हैं। इस मत में उनके 'चरित' भी संगत एवं समञ्जस भी नहीं दीखता। वैदिक परम्परा के एकपत्नीव्रतधारी राम को इस परम्परारा के रामकथाकारों ने हजारों रमणियों के भोग में आसक्त प्रदर्शित

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License

किया।..... पउमचरिउ का रचनाकार स्वयम्भू तो पापभार से बोझिल राम को 'नरकगामी' चित्रित करता है तथा परम पवित्र, सत्कर्मपरायण लक्ष्मण को अर्हत् पद पर प्रतिष्ठित[2]।

पौराणिक कालगणना– परम्परानुसार 4320000 (तैंतालीस लाख बीस हजार) वर्षों की एक चतुर्युगी होती है। इस चतुर्युगी को ही पुनः संक्षिप्त करने के उद्देश्य से कृतयुग (1728000 वर्ष), त्रेता (1296000 वर्ष) तथा द्वापर (864000 वर्ष) मात्र के वर्षों को जोड़कर पुराणों में एक श्पर्याययुग अथवा परिवर्तयुगश की कल्पना की गई है, जो 3888000 वर्षों का होता है। इस दृष्टि से 24वें त्रेतायुग में श्रीराम का अवतरण स्वीकार करने का अर्थ है, उन्हें मनुसंवत् 10,23,83300 से 10,23,84300 वर्ष के बीच में अवस्थित मानना। मनुसंवत् का अर्थ है तेईस पर्याययुगों की तथा चौबीसवें कृतयुग एवं त्रेतायुग की समन्वित कालावधि। इसी कालावधि में अर्थात् 24 वें पर्याययुग में त्रेता के अन्तिम सात सौ तथा द्वापर के प्रारम्भिक तीन सौ वर्षों में राम इस धराधाम पर विराजमान रहे। उनका जीवन एक सहस्र वर्ष का था, न कि ग्यारह सहस्र वर्षों का, जैसा कि कालगणना का रहस्य ठीक से न समझ पाने के कारण लोग मानते हैं[3] ।

1. कथानक में साम्यता और वैषम्यता– दोनों रामायणों का मूल कथानक राम के जीवन, उनके निर्वासन, सीता के हरण और रावण पर विजय के इर्द–गिर्द घूमता है। फिर भी, इनकी प्रस्तुति और संदर्भ में गहरे अंतर हैं।

साम्यता– दोनों में राम का जन्म अयोध्या के राजा दशरथ और कौसल्या के पुत्र के रूप में होता है। वाल्मीकि रामायण में यह वर्णन है–

ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययुः।
ततः च द्वादशे मासे चौत्रे नावमिके तिथौ।[4]

(अर्थात्, यज्ञ समाप्त होने के बाद छह ऋतुएँ बीतीं और बारहवें मास चौत्र की नवमी तिथि को राम का जन्म हुआ।)

पउमचरियं में भी इसी तरह का उल्लेख है–
'दसरहस्स पुत्तो रामो, अज्जोहायं जायो सुहम्मि'।[5]

(अर्थात्, दशरथ का पुत्र राम अयोध्या में सुखपूर्वक जन्मा।)

सीता का हरण और उसका उद्धार दोनों कथाओं का केंद्रीय तत्त्व है। वाल्मीकि लिखते हैं–

''ततो रावण नीतायाः सीतायाः शत्रुकर्शनः। ददर्श धूममुद्भूतं रामः शोकाकुलेन्द्रियः[6]।''

जैन परंपरा में भी यह घटना मौजूद है–

''रावणेण सीदा हरिया, रामो संतप्पिओ दुख्खेण[7]।''

वैषम्यता– वाल्मीकि रामायण में राम स्वयं रावण का वध करते हैं, जो उनके धर्मयुद्ध का प्रतीक है–

''रामेण शरसंधानं कृतं रावणमर्दनम्[8]।''

जबकि जैन रामायण में यह कार्य लक्ष्मण करते हैं, क्योंकि राम अहिंसा के प्रति समर्पित हैं। पउमचरियं में लिखा है–

'लक्खणेण हतो रावणो, रामो अहिंसापरायणो[9]।'

सीता की उत्पत्ति भी दोनों में भिन्न है। वाल्मीकि रामायण में वह धरती से उत्पन्न और जनक की दत्तक पुत्री हैं–

''सीता जनकस्य कन्या, भूमिजा च प्रकीर्तिता[10]।''

जैन परंपरा में वह रावण और मंदोदरी की पुत्री हैं, जिन्हें त्याग दिया गया था–

''रावणमंदोदरीजाता सीदा, परित्यक्ता च जन्मकाले[11]।''

2. चरित्र–चित्रण में अंतर– चरित्र–चित्रण दोनों परंपराओं के दार्शनिक आधार को प्रतिबिंबित करता है। वाल्मीकि रामायण में राम मर्यादा पुरुषोत्तम और विष्णु के अवतार हैं–

''रामो विग्रहवान् धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः[12]।''

जैन रामायण में राम एक मानव हैं, जो संयम और कर्म से महानता प्राप्त करते हैं। पउमचरियं में लिखा है–

''रामो संजमधारी, कर्मणा सिद्धिपथगामी[13]।''

सीता– संस्कृत रामायण में सीता पतिव्रता और त्याग की मूर्ति हैं– ''सीता रामस्य धर्मपत्नी, सर्वलक्षणसंयुक्ता[14]।''

जैन परंपरा में भी वह संयमी हैं, लेकिन उनकी उत्पत्ति का अंतर उनके चरित्र को विशिष्ट बनाता है।

रावण– वाल्मीकि रामायण में रावण एक दुष्ट राक्षस है– ''रावणः पापकर्मा च राक्षसाधिपतिः प्रभुः[15]।''

जैन रामायण में वह विद्वान और शक्तिशाली राजा है, जो अहंकार से पतन की ओर जाता है– ''रावणो विद्वान् बलवान् तथापि दोषेण संयुक्तः[16]।''

लक्ष्मण– जैन कथा में लक्ष्मण रावण का वधकर्ता है और हिंसा के कारण नरक गति को प्राप्त करता हैरू ''लक्खणो हिंसकम्मेण, नरगं गच्छति दुक्खितो[17]।''

वाल्मीकि में वह राम का अनुगामी है।

3. दार्शनिक आधार और नैतिक संदेश

साम्यता– दोनों में अच्छाई की बुराई पर विजय का संदेश है। वाल्मीकि रामायण में यह युद्ध से प्राप्त होती है जबकि जैन में यह संयम से होती है– ''संजमेन विजयो लद्धो, हिंसा कर्मबन्धकरी[18]।''

वैषम्यता– संस्कृत रामायण वैदिक दर्शन पर आधारित है, जहाँ राम ईश्वरीय अवतार हैं– ''विष्णोः अंशः समुद्भूतः, रामः सर्वस्य रक्षकः[19]। जैन रामायण कर्म और अहिंसा पर टिकी है– ''हिंसा कर्मविपाकं बंधति, अहिंसा मुक्तिपथं दर्शति[20]।''

4. साहित्यिक शैली और प्रस्तुति– वाल्मीकि रामायण संस्कृत में काव्यात्मक और छंदोबद्ध है–

चतुर्विंशतिसाहस्रं श्लोकानामुक्तवानृषिः।

तथा सप्तकथा युक्तं काव्यं रामायणाभिधम्।।[21]

जैन रामायण प्राकृत और अपभ्रंश में सरल और उपदेशात्मक है–

''सादं वचनं उपदेसणं, कथया संजमं दर्शति[22]।''

5. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव– संस्कृत रामायण ने भक्ति और मर्यादा को बढ़ावा दिया, जबकि जैन रामायण ने अहिंसा और संयम को। पद्मपुराण में लिखा है – ''अहिंसा परमो धर्मः[23]।

वाल्मीकि रामायण में सामाजिक व्यवस्था पर जोर है जबकि जैन में व्यक्तिगत मुक्ति पर बल है– ''आत्मसंयमेन मुक्तिः[24]।''

निष्कर्षतः यह निर्विवाद है प्रमाणित होता है कि रामायण भारतीय साहित्य और संस्कृति का एक अमूल्य ग्रंथ है, जिसने विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं को गहराई से प्रभावित किया है। वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत रामायण में राम विष्णु के अवतार और धर्म के रक्षक के रूप में चित्रित हैं, जबकि जैन परंपरा, विशेषकर विमलसूरि के पउमचरियं जैसे ग्रंथों में, राम को एक संयमी मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो कर्म और अहिंसा के मार्ग पर चलते हैं। दोनों परंपराओं में राम का जन्म, सीता का हरण और रावण पर विजय प्रमुख कथाएँ हैं, किंतु इनकी प्रस्तुति और व्याख्या में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ हैं। वाल्मीकि रामायण में राम स्वयं रावण का वध करते हैं जबकि जैन परंपरा में यह कार्य लक्ष्मण करते हैं, क्योंकि राम अहिंसा के आदर्श का पालन करते हैं। इसी प्रकार, सीता की उत्पत्ति भी भिन्न बताई गई हैकृवाल्मीकि के अनुसार वह भूमि से उत्पन्न जनक की दत्तक पुत्री हैं, जबकि जैन कथा में वह रावण और मंदोदरी की पुत्री के रूप में जन्म लेकर त्यागी गई थीं। चरित्र–चित्रण में भी दोनों परंपराएँ भिन्न हैं; वाल्मीकि रामायण में राम मर्यादा पुरुषोत्तम और विष्णु के अवतार हैं, जबकि जैन रामायण में वे संयम और साधना से महानता प्राप्त करने वाले मानव हैं। सीता दोनों परंपराओं में पतिव्रता और संयम की प्रतीक हैं, परंतु उनके जन्म की कथा उनके चरित्र को विशेष अर्थ देती है। रावण वाल्मीकि रामायण में दुष्ट राक्षस के रूप में चित्रित है, जबकि जैन परंपरा में वह विद्वान और शक्तिशाली राजा है, जो अहंकार के कारण पतन को प्राप्त होता है। लक्ष्मण भी दोनों कथाओं में अलग भूमिकाएँ निभाते हैं; वाल्मीकि में वे राम के आज्ञाकारी अनुचर हैं जबकि जैन परंपरा में हिंसा के कारण नरकगति को प्राप्त करते हैं। दार्शनिक दृष्टि से वाल्मीकि रामायण वैदिक धर्म और ईश्वरवाद पर आधारित है, जहाँ राम को ईश्वर का अवतार माना गया है, वहीं जैन रामायण कर्म सिद्धांत और अहिंसा के आदर्शों को प्रतिपादित करती है। साहित्यिक दृ ष्टि से वाल्मीकि रामायण संस्कृत में छंदबद्ध और काव्यात्मक शैली में है, जबकि जैन ग्रंथ सरल प्राकृत और अपभ्रंश भाषा में उपदेशात्मक शैली में रचित हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव में वाल्मीकि रामायण ने भक्ति और सामाजिक मर्यादा को बल प्रदान किया जबकि जैन रामायण ने आत्म–संयम, अहिंसा और कर्म के सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया।

अतएव साम्यता कथानक और मूल चरित्रों में दिखती है, जबकि वैषम्यता दर्शन, चरित्र–चित्रण और नैतिकता में स्पष्ट है। यह तुलना दर्शाती है कि एक ही कथा विभिन्न दृष्टिकोणों से कैसे प्रस्तुत हो सकती है, जो भारतीय संस्कृति की विविधता को उजागर करती है। अंतरू यही सार्वभौम सत्य है कि राम सर्वव्यापी है । 'प्राचेतस भगवान् वाल्मीकि को अमोघ आशीः प्रदान करते हुए ब्रह्मा जी ने कहा था – पर्वत यथावत् स्थिर हैं, नदियाँ पूर्ववत् प्रवहमान हैं और रघुनन्दन श्रीराम की पावन गाथा भी, विविध विवर्तों से अग्रेसर होती लोकों को आप्यायित कर रही है[25]।

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।
तावद्रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

सन्दर्भ–

1.(ऋग्वेद 10–3–3) {अर्थ– (भद्ररू) रामभद्र (भद्रया) भजनीय सीता द्वारा (सचमानरू) सेवित होते हुए (आगात) वन में आए। (स्वसारम्) सीता को चुराने के लिए (जार) रावण (पश्चात्) राम और लक्ष्मण के परोक्ष में (अभ्येति) आया। रावण के मारे जाने पर (अग्निः) अग्नि देवता (सुप्रकेतैरूद्युभि) सीता के साथ

(रामंअभि) राम के सामने (रूशदि्भर्वर्णैः) उद्दीप्त तेज के साथ (अस्थात्) उपस्थित हुए और असली सीता को उन्हें सौंप दिया।

2.प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, सप्तधारा, रामकथा की व्यापकता, प्रकाशन– सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, वर्ष 2004, पृष्ठ 111

3.प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, सप्तधारा, रामकथा की व्यापकता, प्रकाशन– सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, वर्ष 2004, पृष्ठ 105

4.वाल्मीकि रामायण, बालकांड, 18.8

5.विमलसूरि, पउमचरियं, अध्याय 5

6.वाल्मीकि रामायण, अरण्यकांड, 65.10

7.विमलसूरि, पउमचरियं, अध्याय 45

8.वाल्मीकि रामायण, युद्धकांड, 108.20

9.विमलसूरि, पउमचरियं, अध्याय 82

10.वाल्मीकि रामायण, बालकांड, 66.14

11.रविषेण, पद्मपुराण, परिच्छेद 12

12.वाल्मीकि रामायण, बालकांड, 1.18

13.विमलसूरि, पउमचरियं, अध्याय 10

14.वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकांड, 30.5

15.वाल्मीकि रामायण, सुंदरकांड, 10.15

16.गुणभद्र, उत्तरपुराण, परिच्छेद 25

17.विमलसूरि, पउमचरियं, अध्याय 85

18.विमलसूरि, पउमचरियं, अध्याय 90

19.वाल्मीकि रामायण, बालकांड, 1.15

20.गुणभद्र, उत्तरपुराण, परिच्छेद 23

21.वाल्मीकि रामायण,बालकाण्ड, 4.1

22.रविषेण, पद्मपुराण, परिच्छेद 5

23.रविषेण, पद्मपुराण, परिच्छेद 20

24.गुणभद्र, उत्तरपुराण, परिच्छेद 30

25.प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, सप्तधारा, रामकथा की व्यापकता, प्रकाशन– सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, वर्ष 2004, पृष्ठ 117